शराफ़त नहीं मिली

हर शख़्स को जहान में इज़्ज़त नहीं मिली।
पैसा मिला दुआओं की दौलत नहीं मिली॥

यूं भागते ही भागते काटी है जिन्दगी।
मां-बाप से भी मिलने की मुहलत नहीं मिली॥

इतना रहा मैं व्यस्त कि सर न खुजा सका।
ख़ुद से भी मुझको मिलने की फ़ुरसत नहीं मिली॥

जिसने ख़ुदा के नाम पर लिख दी हरेक सांस।
उसको किसी भी मोड़ पे ज़िल्लत नहीं मिली॥

हम आठवीं में फेल हुए सिर्फ़ चार बार।
बन जाते हम वज़ीर ये किस्मत नहीं मिली॥

देखा है दूरबीन से सौ बार झांककर।
इन लीडरों में मुझको शराफ़त नहीं मिली॥

दिल टूटने का राज़ तो 'हुल्लड़' से पूछिए।
सब कुछ मिला है उसको मुहब्बत नहीं मिली॥

ज़िन्दगी वो किताब है प्यारे

जिसका चेहरा नक़ाब है प्यारे।
बस वही कामयाब है प्यारे॥

जिसको मेहनत का फल नहीं मिलता।
उसकी किस्मत खराब है प्यारे॥

एक भी सांस घट नहीं सकती।
उसका पक्का हिसाब है प्यारे॥

मौत जिसका है आखिरी पन्ना।
ज़िन्दगी वो किताब है प्यारे॥

सोच कुदरत की ही हक़ीक़त है।
चाह तेरी तो ख़्वाब है प्यारे॥

इंडिया टॉप है करप्शन में।
इंडिया लाज़वाब है प्यारे॥

आपको तो देश खाना चाहिए

हौसले को आज़माना चाहिए।
मुशकिलों में मुस्कुराना चाहिए॥

खुजलियां जब सात दिन तक ना रुकें।
आदमी को तब नहाना चाहिए॥

सांप नेता साथ में मिल जायें तो।
लट्ठ नेता पर चलाना चाहिए॥

यूरिया से पेट कैसे भर गया।
आपको तो देश खाना चाहिए॥

जिस ज़िगर में आग हो, दिल में धुआं।
तब उसे हुक्का पिलाना चाहिए॥

आशिक़ी में बाप जब बेहोश हो।
पुत्र को जूता सुंघाना चाहिए॥

बस रहे हों डेढ़ सौ शायर जहां।
उस नज़र से भाग जाना चाहिए॥

नींद आती ही नहीं जिस शख़्स को।
सीरियल तारा दिखाना चाहिए॥

जो इलैक्शन हार जाये क्या करे?
तिरुपति में सिर मुंड़ाना चाहिए॥

मुल्क़ तो इनका मकां है साथियो

ना यहाँ है ना वहाँ है साथियो।
आदमी ढूँढ़ो कहाँ है साथियो॥

उम्र का इस ज़िस्म से रिश्ता नहीं।
इश्क का ये ही बयाँ है साथियो॥

बाल व्हाइट हो गये तो क्या हुआ।
आज भी 'हुल्लड़' जवाँ है साथियो॥

ज़िस्म का क्या है अभी ढह जायेगा।
रेत का ही तो मकां है साथियो॥

रुह बेचो फिर रहो आराम से।
पत्थरों का ये ज़हाँ है साथियो॥

उस पिता को नींद कैसे आयेगी।
बेटियाँ जिसकी ज़वाँ हैं साथियो॥

वो जियेंगे और कितने दिन बता।
भूख जिनके दरमियाँ है साथियो॥

पार्टी में हाथ है, हाथी, कमल।
आदमी का क्या निशां है साथियो॥

लीडरों का एक्सरे कर लीजिये।
झूठ रग रग में रवां है साथियो॥

ये उठा दें रेंट पर या बेच दें।
मुल्क़ तो इनका मकां है साथियो॥

ज़रूरत क्या थी?

आइना उनको दिखाने की ज़रूरत क्या थी?
वो है बंदर ये बताने की ज़रूरत क्या थी?

घर पे लीडर को बुलाने की ज़रूरत क्या थी?
नाश्ता उसको कराने की ज़रूरत क्या थी?

चार बच्चों को बुलाते तो दुआएं मिलतीं।
साँप को दूध पिलाने की ज़रूरत क्या थी?

अब तो रोज़ाना गिरेंगे तेरे घर पर पत्थर।
आम का पेड़ लगाने की ज़रूरत क्या थी?

वो करोड़ों में न खाती तो भला क्या करती?
चील को मांस दिखाने की ज़रूरत क्या थी?

दो के झगड़े में पिटा तीसरा, चौथा बोला।
"आप को टांग अड़ाने की ज़रूरत क्या थी"?

नौक़री तो ना मिली टांग मगर टूट गयी।
खुद को विकलांग बनाने की ज़रूरत क्या थी?

चोर जो चुप ही लगा जाता तो वो कम पिटता।
बाप का नाम बताने की ज़रूरत क्या थी?

एक शायर ने ग़ज़ल की जगह गाली पेली।
उसको दस पैग़ पिलाने की ज़रूरत क्या थी?

साज़िशें दोस्त ही करते हैं कोई और नहीं।
गालियाँ 'रब' को सुनाने की ज़रूरत क्या थी?

झांककर देखते पहले वो गिरेबां अपना।
बेवफ़ा हमको बताने की ज़रूरत क्या थी?

रात भर रम जायेगा

आंधियां दम तोड़ देंगी, जलजला थम जाएगा।
पर तुम्हारी जुल्फ़ का हरगिज़ नहीं ख़म जाएगा॥

कौन-सा है दल यहाँ पर, है नहीं दलदल जहाँ।
उल्लुओं का राज हो तो किस तरह तम जाएगा॥

आप चाहे छाप दें इस बात को अख़बार में।
जब कोई लीडर मरेगा वो ज़हन्नम जाएगा॥

रेलगाड़ी का सफ़र भी आजकल आसां नहीं।
क्या पता किस ट्रेन के ही साथ में बम जाएगा॥

एक शायर चाय में ही तीन घंटे गा गया।
फोकटी की रम मिले तो रात भर रम जाएगा॥

शायरी को अब मिलेंगी गालियाँ स्टेज़ पर।
जो लतीफ़े पेल देगा वो कवी जम ज़ाएगा॥

काम तो ये है तुम्हारा तुम करो या मत करो।
जो तुमें मंजूर होगा वो मुझे जम जाएगा॥

तुम मुझे कुछ भी बना दो, ज़िन्दगी की फ़िल्म में।
ये तुम्हारा ऐक्टर हर रोल में रम जाएगा॥

है अगर मेहमान कोई चार दिन तो झेल ले।
जिस तरह खुशियाँ गयी थीं, उस तरह ग़म जाएगा॥

भूमिका जब तक लिखी है आप मर सकते नहीं।
आ गया ग़र बीच में तो, लौटकर यम जाएगा॥

प्रोब्लम को प्रोब्लम होने लगेगी

पीर अपने बाप को रोने लगेगी।
और चिन्ता मूर्च्छित होने लगेगी॥

तुम हँसी की बाढ़ में, सब दुःख बहा दो।
प्रोब्लम को प्रोब्लम होने लगेगी॥

लीडरों के दाग़ साबुन को दिखा दो।
उसकी पूरी फैक्ट्री रोने लगेगी॥

कुंडली में जब शनी पीछे पड़ेगा।
जन्म दिन पर तेरवीं होने लगेगी॥

कोई गंजा चार दिन उलटा लटक ले।
खोपड़ी ख़ुद बाल को बोने लगेगी॥

तब ख़ुशी का अर्थ आयेगा समझ में।
जब ग़मों से दोस्ती होने लगेगी॥

हसरतें दो-चार हों तो ठीक भी है।
अनगिनत में जान ही खोने लगेगी॥

तुम स्वयं को ऐक्टर ही मान लो तो।
मौत में भी गुदगुदी होने लगेगी॥

ईश्वर को पार्टनर अपना बना लें।
हर मुसीबत 'कब्र' में सोने लगेगी॥

क्या बिगाड़ेगा समय उस आदमी का?
जिसको ग़म में भी खुशी होने लगेगी॥

जिस समय तुम दिलरुबा का नाम लोगे।
तब वहाँ भी धुकधुकी होने लगेगी॥

जो जिया अपने लिए वो मर चुका है।
'लाश' उसकी खुद उसे ढोने लगेगी॥

ज़िन्दगी की दौड़ में रफ़्तार कम कर।
टांग वर्ना फ्रेक्चर होने लगेगी॥

भाग्य में पौव्वा लिखा है दोस्तो

बोतलों से क्या गिला है दोस्तो।
भाग्य में पौव्वा लिखा है दोस्तो॥

पीर जानेगा वही तो प्यार की।
प्लास्टर जिसके बँधा है दोस्तो॥

लाख बूढ़ा है मगर मक़बूल है।
माधुरी पर वो फ़िदा है दोस्तो॥

औरतों ने घास डाली फँस गया।
आदमी कितना गधा है दोस्तो॥

ज़रपरस्ती घुस गई सब इश्क़ में।
बैंक में अब झुनझुना है दोस्तो॥

प्यार के इन रास्तों पर आप का।
नेलसन उल्लू बना है दोस्तो॥

बिजलियाँ फिर झोंपड़ी पर गिर पड़ीं।
फिर कोई मुफ़लिस मरा है दोस्तो॥

आदमी का ईश्वर तो मर चुका।
आजकल पैसा ख़ुदा है दोस्तो॥

तू ज़रा फिर सोच ले

भाग्य जब तेरा फलेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।
बाप भी तुझसे जलेगा, तू ज़रा फिर सोच ले॥

संगदिल है ये ज़माना, बाज़ आयेगा नहीं।
मूंग सीने पर दलेगा, तू ज़रा फिर सोच ले॥

आज फैली है फसादों की धरम की आड़ में।
फिर किसी का घर जलेगा, तू ज़रा फिर सोच ले॥

फूल काग़ज़ का समझ ले, आजकल की दोस्ती।
ख़्वाब में भी नहीं खिलेगा, तू ज़रा फिर सोच ले॥

कर रहा है किसलिए, इंसान की चमचागिरी।
उस ख़ुदा से सब मिलेगा, तू ज़रा फिर सोच ले॥

जो पते के शेर थे, सब ओल्ड शायर कह गये।
क्या तू जूठन पे पलेगा, तू ज़रा फिर सोच ले॥

हास्य रस की फील्ड में तो, आज भी इस्कोप है।
इसमें लंगड़ा भी चलेगा, तू ज़रा फिर सोच ले॥

रूह प्यासी किसलिए?

इक ज़रा-सा ग़म मिला तो बदहवासी किसलिए
मानते हो जब ख़ुदा को फिर उदासी किसलिए?

हर समय मातम मनाना बुज़दिलों का काम है
दे रहे हो चोर को तुम यार फांसी किसलिए?

ज़िस्म से जीते रहे जो क्या उन्हें मालूम है
दौलतों की इस नदी में, रूह प्यासी किसलिए?

सागरों की क्या ख़ता है दोस्तो

राज़ ये किसको पता है दोस्तो
वो नहीं हमसे जुदा है दोस्तो।

मैं अकेला था मगर डूबा नहीं
साथ में मेरे ख़ुदा है दोस्तो।

एक शायर रोज़ मर कर जी लिया
दर्द ही उसकी दवा है दोस्तो।

कोशिशों से क्या नहीं मुमक़िन यहाँ
फूल पत्थर पर खिला है दोस्तो।

जो मुक़द्दर को ख़ुदा समझे रहे
कुछ नहीं उनको मिला है दोस्तो।

धन बहुत है पर नहीं बच्चा कोई
सब नहीं सबको मिला है दोस्तो।

सौ बरस तक तुम जियोगे मत कहो
आदमी तो बुलबुला है दोस्तो।

लाख चीखो, ईश्वर करता वही
आपका जिसमें भला है दोस्तो।

जो तुम्हारा है तुमे मिल जाएगा
अब तलक ये ही हुआ है दोस्तो।

कुदरतों के फैसले मंज़ूर कर
जो हुआ अच्छा हुआ है दोस्तो।

मुश्क़िलों को क्या पसीना आ गया!
साथ में माँ की दुआ है दोस्तो।

इल्म पढ़कर जो अमल करता नहीं
बेवक़ूफ़ों का चचा है दोस्तो।

आपका लोटा ही छोटा पड़ गया
सागरों की क्या ख़ता है दोस्तो।

अपने अपने तिनके हैं

मुझको उनके नाम पते दो, दाग़ नहीं जिन-जिनके हैं।
सबकी अपनी-अपनी दाढ़ी, अपने-अपने तिनके हैं॥

कुछ लोगों की जीवन-गाथा, वेश्याओं से मिलती है।
आज हैं उनके, कल अपने थे, पता नहीं किन-किन के हैं॥

ये शब्दों की अय्याशी के, राजा इन्द्र कहे जाते हैं।
कोई गुड़ की डली बता दो, जहाँ नहीं ये भिनके हैं॥

पहले तो नत्थी होते हैं, फिर चुभते हैं जीवन भर।
रिश्तेदारों की मत पूछो, वंशज सारे पिन के हैं॥

जितना खा सकता है, खाले चारे तक में चोंच डुबा।
फिर से भैंस चराओगे तुम, मंत्री पद कुछ दिन के हैं॥

जिसकी ख़ातिर हैं घोटाले, वो तन तो मर जायेगा।
नेताओं को पता नहीं है, ये तन तो पल-छिन के हैं॥

भेड़िया हो जायेगा

इश्क़ मत करना किसी से, बावला हो जाएगा।
तू जवानी के दिनों में, पिलपिला हो जायेगा॥

है बहुत रिस्की ये विस्की, पुत्र पीना छोड़ दे।
रोज़ पौव्वा पी लिया तो, पीलिया हो जायेगा॥

शख़्स वो जो टुन्न होकर, बक रहा है गालियाँ।
चाहे दिल्ली में रहे पर, आगरा हो जायेगा॥

पैंट का कपड़ा न लेना, बॉम्बे वी.टी. से कभी।
धीरे-धीरे यह सिकुड़कर जांघिया हो जायेगा॥

पेलकर पन्द्रह लतीफ़े मंच पर तो जम गया।
गोष्ठी में हूट लेकिन शर्तिया हो जायेगा॥

ये तो पानी का असर है, तेरी ग़लती कुछ नहीं।
मुम्बई में जो रहेगा, बेवफ़ा हो जायेगा॥

लीडरों के इस नगर में, है तेरी औक़ात क्या।
अच्छा-खासा आदमी भी, सिरफिरा हो जायेगा॥

दुम हिलाता फिर रहा है, चंद वोटों के लिए।
इसको जब कुर्सी मिलेगी, भेड़िया हो जायेगा॥

हर तरफ हिंसा-डकैती, हो रहे हैं अपहरण।
रफ़्ता रफ़्ता मुल्क़ सारा, माफ़िया हो जायेगा॥

जनवरी छब्बीस अब तो, तब मनेगी देश में।
जब यहाँ हर भ्रष्ट नेता, गुमशुदा हो जायेगा॥

बोझ लादे फिर रहा है, जो दुःखों का हर समय।
आदमी होते हुए भी, वो गधा हो जायेगा॥

क्या पता था शायरी में, आयेंगे ऐसे भी दिन।
हर ग़ज़ल का शेर 'हुल्लड़' मर्सिया हो जायेगा॥

सीढ़ियां नहीं होतीं

नाम में शहीदों के, डिग्रियां नहीं होतीं।
बदनसीब हाथों में, चूड़ियां नहीं होतीं॥

सबको उस रजिस्टर पर हाज़िरी लगानी है।
मौत वाले दफ़्तर में छुट्टियाँ नहीं होतीं॥

बेकसूर मरते हैं, आजकल के दंगों में।
उस जगह पे नेता की, अर्थियाँ नहीं होतीं॥

कुछ ग़रीब कर्फ्यू में, भूख से भी मरते हैं।
मौत का सही कारण, गोलियाँ नहीं होतीं॥

जो ज़मीर रख आये, जेब में पड़ोसी की।
उनसे देशभक्ति की, ग़लतियाँ नहीं होतीं॥

इतनी ऊँची मत छोड़ो, गिर पड़ोगे धरती पर।
क्योंकि आसमानों में, सीढ़ियाँ नहीं होतीं॥

मत करो बुढ़ापे में, इश्क़ की तमन्नाएँ।
क्योंकि फ्यूज़ बल्बों में, बिजलियाँ नहीं होतीं॥

रोज़ क्यों नहाते हो, वज़न मत घटाओ तुम॥
वो बदन भी क्या जिसमें, खुजलियां नहीं होतीं॥

जब से ये पुलिस वाले, 'गश्त' पर नहीं आते।
तब से इस मुहल्ले में, चोरियाँ नहीं होतीं॥

कब तलक बताओगे तुम, कज़िन कवित्री को।
बेवकूफ़ इतनी तो, बीवियाँ नहीं होतीं॥

हो गयी बहुत महँगी, यार बेतुकी कविता।
दस हज़ार से कम में, पंक्तियाँ नहीं होतीं॥

ये तो आम जनता है, चाहे चूस लो जितना।
फ़िक्र मत करो इनमें, गुठलियां नहीं होतीं॥

कर्म के मुताबिक ही, फल मिलेगा इंसा को।
आम वाले पेड़ों पर, भिंडियाँ नहीं होतीं॥

वो भरी जवानी में, ख़ुदकुशी नहीं करता।
काश! उसके कुनबे में, बेटियाँ नहीं होतीं॥

मार खाके सोता है रोज़ अपनी आया से।
सबके भाग्य में माँ की, लोरियाँ नहीं होतीं॥

जो तलाश में खुद की, चल रहे अकेले हैं।
यार उनके पाँवों में, जूतियाँ नहीं होतीं॥

बूंद में समंदर को, जिसने पा लिया 'हुल्लड़'।
साहिलों से फिर उसकी, दूरियाँ नहीं होतीं॥

भूख का आलाप है

ये हमारी ज़िन्दगी है या किसी का श्राप है।
चैन के दो पल मिलेंगे, सोचना भी पाप है॥

जिसको समझे थे मसीहा, दार पर लटका गया।
आप कहकर मत बुलाओ, आस्तीं का सांप है॥

हर तरफ़ कालिख पुती है, चांदनी के नाम पर।
आजकल ज़ालिम अंधेरा, रोशनी का बाप है॥

किसको कहते हैं सियासत आप भी सुन लीजिए।
कुर्सियों का कीर्तन है, गद्दियों का जाप है॥

उल्लुओं के देश में हम किसलिए पैदा हुए।
यह शिकायत ही नहीं है आत्मिक संताप है॥

आप मेरे शेर सुनकर, दिल्लगी मत कीजिए।
शायरी तो नाम की है भूख का आलाप है॥

सता हो रहा हूँ

अरी मौत ! तुझ पर फ़िदा हो रहा हूँ।
मैं इस ज़िन्दगी से जुदा हो रहा हूँ॥

बहुत बोझ ढोया है जीने की खातिर।
मैं शायर हूँ लेकिन गधा हो रहा हूँ॥

ज़माने ने मुझको सताया है इतना।
मैं पत्नी से पहले सता हो रहा हूँ॥

अरे क़र्ज़ वालो बहुत रोओगे तुम।
बिना बिल चुकाये विदा हो रहा हूँ॥

जो चाहो तो कुर्की करा लीजियेगा।
मेरा क्या है मैं तो हवा हो रहा हूँ॥

नहीं मैं ही जब तो ये ग़म क्या करेंगे।
ग़मों के लिए गुमशुदा हो रहा हूँ॥

शेर को ककड़ी खिलाना चाहता है

दोस्तों को आज़माना चाहता है?
चोट पर फिर चोट खाना चाहता है?

आज के इस दौर में ईमानदारी!
चील से तू मांस खाना चाहता है?

क्या मिलेगा इन उसूलों से तुझे अब।
उम्र-भर क्या घास खाना चाहता है?

बिन सिफ़ारिश ढूंढ़ता है नौक़री को
क्यों नदी में घर बनाना चाहता है?

जा रहा बाज़ार में थैला लिये तू।
रोज़ ही क्यों सिर मुंड़ाना चाहता है?

ये व्यवस्था ख़ून पी लेगी तुम्हारा।
शेर को ककड़ी खिलाना चाहता है?

तंज़ के ये शेर सुनकर लोग बोले
क्यों हमारे कान खाना चाहता है?

अपहरण उसका हुआ है भानजे

ज़िन्दगी भी इक जुआ है भानजे।
वक़्त नोकीला सुआ है भानजे॥

आजकल क्यों द्रौपदी नंगी हुई,
कृष्ण को अब क्या हुआ है भानजे?

खो गयी ईमानदारी मत कहो।
अपहरण उसका हुआ है भानजे॥

जुल्म पर भारी पड़ी है राजनीति।
यह तो उसकी भी बुआ है भानजे॥

अच्छे-अच्छे को भिखारी कर दिया।
यह शेयर ऐसा 'मुआ' है भानजे॥

बोलता है सच इसे बाहर करो।
कह दो यह तो बुर्जुआ है भानजे॥

तुमको हंसाने आ गये

लौटकर फिर पास मेरे ग़म पुराने आ गये।
लग रहा है शायरी के दिन सुहाने आ गये॥

मुश्क़िलें जिसमें न हों, वह ज़िन्दगी बेकार है।
फूल पत्थर पर खिलाने के ज़माने आ गये॥

हमने तुमको दिल दिया था, तूने हमको ग़म दिया।
गीत तेरे हैं तुझी को हम सुनाने आ गये॥

मैं ही अपना मित्र भी हूँ और दुश्मन भी स्वयं।
इसलिए निज आत्मा को आज़माने आ गये॥

पीर दरिया-सी बहा दी आंसुओं की शक्ल में।
खुद बहुत रोये मगर तुमको हंसाने आ गये॥

किसी ने नहीं किया

इस मुल्क़ में ये काम किसी ने नहीं किया
ग़ुरबत का कत्लेआम किसी ने नहीं किया।
नंगों को राम-राम किसी ने नहीं किया
ग्रीटिंग का टेलीग्राम किसी ने नहीं किया॥

जितने अंगूठा छाप थे मंत्री बना दिये
शायर का ऐतराम किसी ने नहीं किया।
शिमला में चार नेता मरे जब से ठंड में
तब से वहाँ हमाम किसी ने नहीं किया॥

रहने को घर की बात तो इक ख़्वाब है मियां
अर्थी का इंतज़ाम किसी ने नहीं किया।
सोने के चेन वाली वो घड़ियाँ तो बिक गयीं
पर वक़्त को गुलाम किसी ने नहीं किया॥

उसने ज़मीर बेचकर कोठी ख़रीद ली
सचाई को सलाम किसी ने नहीं किया।
करते रहे जो ख़ून से तामीरे मयक़दा
उनको शरीक़े ज़ाम किसी ने नहीं किया॥

जिनको जगाना चाहिए वो खुद ही सो गये
आराम को हराम किसी ने नहीं किया।
परमात्मा से पंगा कोई ले तो कौन ले
भूकंप को तमाम किसी ने नहीं किया॥

बुड्ढों को हटाया जाये

मुल्क़ में ऐसा भी कानून बनाय जाये
जो भी मनहूस हो, सूली पे चढ़ाया जाये।

सिर्फ़ गीता को सुनाजे से भला क्या होगा!
आचरण में भी किसी श्लोक को लाया जाये।

मंज़िलें खुद तो नहीं आयेंगी चलके घर पर
है ज़रूरी के कदम अपना बढ़ाया जाये।

ना तो बिजली है, ना पानी है, ना पाक़ीज़ा हवा
भ्रष्ट नेताओं को बिच्छू से कटाया जाये।

दाम साबुन के सुने हैं तो पसीना आया
क्यों न अब रोज़ पसीने से नहाया जाये।

भूख से कोई भी मुफ़लिस जो मरे बस्ती में
सारी बस्ती के अमीरों को जलाया जाये।

जो ये कहते हैं ग़रीबी का नहीं नामोनिशां
उनको ताज़ा कोई अख़बार पढ़ाया जाये।

हमने विस्की के लिए पूछा तो लीडर बोला
हमको दंगों का गरम खून पिलाया जाये।

जिनको इस मुल्क़ की मिट्टी से कोई प्यार नहीं
ऐसे गद्दारों को मिट्टी में मिलाया जाये।

जिसके बच्चे हों यहाँ पांच से ज़्यादा हमदम
उस गधे को तो गधे पर ही बिढ़ाया जाये।

देश के वास्ते जीते नहीं जो भी नेता
ऐसे नेताओं को गंगा में डुबाया जाये।

भीड़ अँगड़ाइयाँ लेती है चली जायेगी
क्यों न अब मंच पे 'हुल्लड़' को बुलाया जाये।

अपना सर फुड़वायें क्यों?

क्या डॉक्टर ने बतलाया है? पशु मेले में जायें क्यों
भैंस जहाँ हो सुनने वाली, अपनी बीन बजायें क्यों!

सारे चेहरे इस बस्ती के, हमें एक्स-रे लगते हैं
इंसानों से मिल भी लेते, भूतों से बतियाएं क्यों!

मां की गोदी में सर रखकर हम सारे ग़म भूल गये
जीते-जी ज़न्नत पायी है बता चांद पे जायें क्यों!

जब से हमने ख़बर पढ़ी है सर्दी से मर जाने की
तब से ही ये सोच रहे हैं, हम हर मंथ नहायें क्यों!

जायेंगे जब असेम्बली में, जूते खुद पड़ जायेंगे
हम फिर बाटा की दुकान पर, जूते लेने जायें क्यों!

'हुल्लड़' ने जो पुस्तक लिक्खी, रद्दी में भी नहीं बिकी
इसे कोर्स में लगवा देंगे, मंचों पर पढ़वायें क्यों?

कोई भरोसा नहीं

झूठे यारों का कोई भरोसा नहीं
रिश्तेदारों को कोई भरोसा नहीं।

चोर पर तो भरोसा है हमको मगर
चौकीदारों का कोई भरोसा नहीं।

आम के पेड़ पर अबके भिण्डी लगी
इन बहारों का कोई भरोसा नहीं।

एक बीमार कल नर्स को ले उड़ा
इन कुँआरों का कोई भरोसा नहीं।

यार 'हुल्लड़' से हुशियार रहना ज़रा
व्यंग्यकारों का कोई भरोसा नहीं।

जन्मदिन की बधाई मिली मौत पर
डाक-तारों का कोई भरोसा नहीं।

कड़वे नुस्ख़े मुफ़ीद होते हैं

इश्क़ में ही शहीद होते हैं
अब ना त्यागी हमीद होते हैं

जब भी बच्चे मरे हैं दंगों में
मिल के होली व ईद रोते हैं।

रोज़ अंधे गवाह अदालत में
आजकल चश्मदीद होते हैं।

इस व्यवस्था को नीम पिलवा दो
कड़वे नुस्ख़े मुफ़ीद होते हैं।

आज के दौर में तो ऐ 'हुल्लड़'
लोग ज़र के मुरीद होते हैं।

संसद में खुद सो गये

उनके जूते कहाँ खो गये
चोर के तो नहीं हो गये।

जैसे आये थे वैसे गये
लोग धोबी को ही धो गये।

जब पड़ेंगे तो मर जाओगे
आप खोने में ही रो गये।

हमने कविता पढ़ी एक ही
उनके जूते मगर दो गये।

मुल्क़ को क्या जगायेंगे वो
जो कि संसद में खुद सो गये।

अच्छा है पर कभी-कभी-1

बहरों को फ़रियाद सुनाना, अच्छा है पर कभी-कभी
अंधों को दर्पण दिखलाना, अच्छा है पर कभी-कभी

ऐसा ना हो तेरी कोई उंगली ग़ायब हो जाये
नेताओं से हाथ मिलाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

बीवी को बंदूक़ सिखाकर, तुमने रिस्की काम किया
अपनी लुटिया आप डुबाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

जिसकी चोरी हुई बिचारा वही बंद था थाने में
कुतवाली में रपट लिखाना अच्छा है पर कभी-कभी।

तुम रूहानी शेर पढ़ोगे, पब्लिक सब भग जायेगी
भैंस के आगे बीन बजाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

घूसे-लात चले आपस में, संयोजक का सिर फूटा
कवियों को दारू पिलवाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

जितने चांदी के चम्मच थे सब-के-सब ग़ायब पाये
कवियों को मेहमान बनाना अच्छा है पर कभी-कभी।

कविवर टुल्लानंद आर्य जी प्रथम पंक्ति में हूट हुए
किसी और के गीत सुनाना अच्छा है पर कभी-कभी।

वीमे वाले क्लेम के बदले तेरा क़ीमा कर देंगे
खुद ही घर में आग लगाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

ऐकबाल के सिर्फ़ तीन सौ उस फंक्शन में खर्च हुए
मुंडन की दावत करवाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

हुल्लड़ खाकर पान बता दो, पीक कहाँ पर थूकोगे
लंदन में तम्बाकू खाना अच्छा है पर कभी-कभी।

अच्छा है पर कभी-कभी-2

श्रोताओं को मूर्ख बनाना, अच्छा है पर कभी-कभी
गीत सुनाकर उन्हें सुलाना अच्छा है पर कभी-कभी।

कविताओं के साथ-साथ क्या स्मगलिंग भी करते हो?
बार-बार अमरीका जाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

ऊपर वाला देख रहा है कोई देखे, ना देखे
सूरदास का पर्स चुराना, अच्छा है पर कभी-कभी।

वो लड़ते थे लड़ने देते, आप बीच में क्यूं कूदे!
समझौते में खुद पिट जाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

यार-दोस्त सब पूछ रहे हैं, बाप मरे या माता जी
रोल की खातिर सिर मुंड़वाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

भूत-प्रेत हो, चमगादड़ हो, या कोई औघड़ साधू
एक साल के बाद नहाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

मुझको अपनी इस हरकत पर, जूते तो पड़ने ही थे
गंजों में कंधे बटवाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

तू मंदिर में ढूंढ़ रहा है, वो तो तेरे दिल में है
पत्थर को भगवान बनाना अच्छा है पर कभी-कभी।

बाहर काफ़ी चकाचौंध है भीतर बहुत अंधेरा है
छत की खातिर खुद बिक जाना अच्छा है पर कभी-कभी।

दु:ख को ऐसे देखो जैसे दृश्य हो कोई सपने का
मुसीबतों में मुंह लटकाना, अच्छा है पर कभी-कभी।

शराफ़त नहीं मिली

हर शख़्स को जहान में इ़ज़्ज़त नहीं मिली।
पैसा मिला दुआओं की दौलत नहीं मिली॥

यूं भागते ही भागते काटी है जिन्दगी।
मां-वाप से भी मिलने की मुहलत नहीं मिली॥

इतना रहा मैं व्यस्त कि सर न खुजा सका।
ख़ुद से भी मुझको मिलने की फ़ुरसत नहीं मिली॥

जिसने ख़ुदा के नाम पर लिख दी हरेक सांस।
उसको किसी भी मोड़ पे ज़िल्लत नहीं मिली॥

हम आठवीं में फेल हुए सिर्फ़ चार बार।
वन जाते हम वज़ीर ये किस्मत नहीं मिली॥

देखा है दूरबीन से सौ बार झांककर।
इन लीडरों में मुझको शराफ़त नहीं मिली॥

दिल टूटने का राज़ तो 'हुल्लड़' से पूछिए।
सब कुछ मिला है उसको मुहब्बत नहीं मिली॥

ज़िन्दगी वो किताब है प्यारे

जिसका चेहरा नक़ाब है प्यारे।
बस वही कामयाब है प्यारे॥

जिसको मेहनत का फल नहीं मिलता।
उसकी किस्मत खराब है प्यारे॥

एक भी सांस घट नहीं सकती।
उसका पक्का हिसाब है प्यारे॥

मौत जिसका है आखिरी पन्ना।
ज़िन्दगी वो किताब है प्यारे॥

सोच कुदरत की ही हक़ीक़त है।
चाह तेरी तो ख़्वाब है प्यारे॥

इंडिया टॉप है करप्शन में।
इंडिया लाजवाब है प्यारे॥

आपको तो देश खाना चाहिए

हौसले को आज़माना चाहिए।
मुशक़िलों में मुस्कुराना चाहिए॥

खुज़लियां जब सात दिन तक ना रुकें।
आदमी को तब नहाना चाहिए॥

सांप नेता साथ में मिल जायें तो।
लट्ठ नेता पर चलाना चाहिए॥

यूरिया से पेट कैसे भर गया।
आपको तो देश खाना चाहिए॥

जिस ज़िगर में आग हो, दिल में धुआं।
तब उसे हुक्का पिलाना चाहिए॥

आशिक़ी में बाप जब बेहोश हो।
पुत्र को जूता सुंघाना चाहिए॥

बस रहे हों डेढ़ सौ शायर जहां।
उस नज़र से भाग जाना चाहिए॥

नींद आती ही नहीं जिस शख़्स को।
सीरियल तारा दिखाना चाहिए॥

जो इलैक्शन हार जाये क्या करे?
तिरुपति में सिर मुंड़ाना चाहिए॥

मुल्क़ तो इनका मकां है साथियो

ना यहाँ है ना वहाँ है साथियो।
आदमी ढूँढ़ो कहाँ है साथियो॥

उम्र का इस ज़िस्म से रिश्ता नहीं।
इश्क का ये ही बयाँ है साथियो॥

बाल व्हाइट हो गये तो क्या हुआ।
आज भी 'हुल्लड़' जवाँ है साथियो॥

ज़िस्म का क्या है अभी ढह जायेगा।
रेत का ही तो मकां है साथियो॥

रुह बेचो फिर रहो आराम से।
पत्थरों का ये ज़हाँ है साथियो॥

उस पिता को नींद कैसे आयेगी।
बेटियाँ जिसकी ज़वाँ हैं साथियो॥

वो जियेंगे और कितने दिन बता।
भूख जिनके दरमियाँ है साथियो॥

पार्टी में हाथ है, हाथी, कमल।
आदमी का क्या निशां है साथियो॥

लीडरों का एक्सरे कर लीजिये।
झूठ रग रग में रवां है साथियो॥

ये उठा दें रैंट पर या बेच दें।
मुल्क़ तो इनका मकां है साथियो॥

आजकल

शायरों को मिल रहे है, ढेरों पत्थर आजकल
क्योंकि महँगे हो गये, अंडे-टमाटर आजकल।

गीत चोरी का छपाया, उसने अपने नाम से
रह गया है शायरों का, यह करैक्टर आजकल।

गद्य में भी चुटकुले हैं, पद्य में भी चुटकुले
रो रहा है मंच पर, ह्यूमर सटायर आजकल।

इन कुएं के मेंढकों ने पी लिया पानी तमाम
डूब कर मरने लगे हैं, सब समंदर आजकल।

काटने को दौड़ता है, हर दिवस सप्ताह का
जब से सर पे चढ़ गया है, ये शनीचर आजकल।

पालने का शौक है तो आप कुत्ता पालिए
गोद मत लेना किसी का, कोई पुत्तर आजकल।

आदमी के ख़ून का प्यासा हुआ है आदमी
हंस रहे हैं आदमी पर सारे बंदर आजकल।

हमारे नेताजी

रहते देहरादून हमारे नेताजी
देश का पीते ख़ून हमारे नेताजी।

संविधान भी इन्हें नमस्ते करता है
खुद ही हैं कानून हमारे नेताजी।

हम तो केवल तारे हैं, वह भी टूटे
सरकारी फुलमून हमारे नेताजी।

धोती कुर्त्ता तो भाषण का चोला है
घर पर हैं पतलून हमारे नेताजी।

इनके चमचे कातिल हैं पर बाहर हैं
कर देते हैं फून हमारे नेताजी।

किसी बात पर इनसे पंगा मत लेना
रखते हैं नाख़ून हमारे नेताजी।

छठी फेल हैं फिर भी आज मिनिस्टर हैं
सूरत से 'पीयून' हमारे नेताजी।

'हुल्लड़' तुम तो दो कौड़ी के शायर हो
लेकिन अफलातून हमारे नेताजी।

वक़्त ही वह डिटॉल है दद्दा

हर तरफ़ भेड़चाल है दद्दा
कुर्सियों का कमाल है दद्दा।

पहले होता था दाल में काला
अब तो काले में दाल है दद्दा।

डाकुओं का भी कुछ कैरक्टर है
पर ये नेता दलाल हैं दद्दा।

बात करते हो तुम सियासत की
वो तो पक्की छिनाल है दद्दा।

कोई घोड़ा हो या कि अफ़सर हो
चलता-फिरता बवाल है दद्दा।

जो कि भरता है जख़्म दिल के भी
वक़्त ही वह डिटॉल है दद्दा।

मेरे शेरों में 'आग' है 'हुल्लड़'
उनकी लकड़ी की टाल है दद्दा।

मुस्कुराने के लिए

मसखरा मशहूर है आंसू छिपाने के लिए
बांटता है वह हँसी, सारे ज़माने के लिए।

घाव सबको मत दिखाओ, लोग छिड़केंगे नमक
आयेगा कोई नहीं मरहम लगाने के लिए।

देखकर तेरी तरक़्की ख़ुश नहीं होगा कोई
लोग मौक़ा ढूंढ़ते हैं, काट खाने के लिए।

'फलसफ़ा' कोई नहीं है और ना मक़सद कोई
लोग कुछ आते जहाँ में हिनहिनाने के लिए।

मिल रहा था भीख में सिक्का मुझे सम्मान का
मैं नहीं तैयार था झुककर उठाने के लिए।

ज़िन्दगी में ग़म बहुत हैं, हर कदम पर हादसे
रोज़ कुछ टाइम निकालो मुस्कुराने के लिए।

अमेरिका में एक मेम को देखकर

रूपसी! जब तू समंदर में नहाई होगी
आग पानी में वहाँ तूने लगाई होगी

तेरी आँखों में दिखी है, मुझे रम की बोतल
ये तेरे होंठ नहीं, कोई रुबाई होगी।

हमको ठेके पे बनाया है ख़ुदा ने लेकिन
तू तो वी० आई० पी० कोटे से ही आई होगी।

तू तो ब्यूटी में लगी है मुझे सीयर्स टॉवर
क्या कैरेक्टर में तेरे इतनी ऊँचाई होगी?

चार को छोड़ दिया, पांचवें को फांस लिया
इंडिया की नहीं, लंदन की लुगाई होगी।

डॉक्टर से तो यह पूछा था शिकागो में कभी
क्या तेरे पास मेरे दुःख की दवाई होगी।

हर कोई भागता रहता है परेशां है यहाँ
गॉड ने जल्दी में यह दुनिया बनाई होगी।

बिजलियाँ आयँगी

अब ना पहले-सी वो पीढ़ियाँ आयँगी
कुछ चरस से भरी बीड़ियाँ आयँगी।

चाहते हैं ये मंज़िल बिना ही चलें
क्या बुलाने इन्हें सीढ़ियाँ आयँगी?

यार खाके मिठाई ना सोया करो
ख़्वाब में भी तेरे मक्खियाँ आयँगी।

तुमने चूहों को घर में बुलाया अगर
खिड़कियों से यहाँ बिल्लियाँ आयँगी।

इस अँधेरों में चोरों की चांदी हुई
जाने यू० पी० में कब बिजलियाँ आयँगी।

पहले जनता के दिल में जगह तो बना
घर बुलाने तुझे कुर्सियाँ आयँगी।

हो गये सात दिन अब तो 'हुल्लड़' नहा
वर्ना खुजली नहीं, खुज़लियाँ आयँगी।

आदमी बावला हो गया है

तेरे बंदों को क्या हो गया है
जिसको देखो ख़ुदा हो गया है
मुल्क़ में सब मयस्सर है लेकिन
सिर्फ ईमाँ जुदा हो गया है।

(पहले इनसान बंदर था यारो
अब मुक़म्मिल गधा हो गया है
जब से शादी हुई है हमारी
सारा घर आगरा हो गया है।)

सिर्फ़ रोटी जुटाने में 'हुल्लड़'
आदमी बावला हो गया है
जानवर से शिकायत नहीं है
आदमी मरखना हो गया है।

सब-के-सब पागल हैं

तुम ढूंढ़ रहे चूहे, बिल्ली के घराने में
कंघे नहीं मिलते हैं, गंजों के ठिकाने में।
घर हमने बनाया है, मंदिर के ही पिछवाड़े
कितनी सुविधाएँ हैं, जूतों को चुराने में॥

लकड़ी बड़ी महँगी है, रह लो बिन दरवाज़े
नानी मर जाती है, सागौन लगाने में।
बुश्शर्ट ग़रीबी की, तन ढांप नहीं पाई
काटी है उमर हमने, पैबंद लगाने में॥

इस अर्थ-व्यवस्था की तारीफ़ में क्या कहिए
छह-सात कटोरे हैं, भारत के खज़ाने में।
बेटी की विदाई पर छुप-छुप के न रोया हो
ऐसा कोई जोकर तुम दिखला दो ज़माने में॥

इन वोट के खेतों में कुछ प्यार भी बो देते
तुम व्यस्त रहे केवल, लाशों को उगाने में।
मस्ज़िद से नहीं मतलब, मंदिर से है लेना क्या?
सब-के-सब पागल हैं, कुर्सी हथियाने में॥

हिनहिनाने आ गये

वोट दे दो, वोट दे दो, बड़बड़ाने आ गये
क्यों हमारी लाश को, कंधा लगाने आ गये?

देश से मतलब नहीं है, देश जाये भाड़ में
चंद नारे रट लिये फिर हिनहिनाने आ गये।

नाव को रक्खा है गिरवी, नाख़ुदा को मारकर
तोड़कर पतवार को, लुटिया डुबाने आ गये।

प्यास से हम तप रहे थे, दोपहर की धूप में
उनकी किरपा देखिए, भाषण पिलाने आ गये।

भीड़ तो जुटती नहीं है, अब किसी भी नाम पर
लोग कहने लग गये हैं, कान खाने आ गये।

हमने समझा टल गये हैं, पांच बरसों के लिए
उपचुनावों के बहाने, फिर सताने आ गये।

बुझ गया वोटों का हुक्का, हो गयी ठंडी चिलम
फिर भी ताऊ जी हमारे गुड़गुड़ाने आ गये।

कभी-कभी

लगता नहीं है भीख में, नम्बर कभी-कभी
खिलवाती है यह लाटरी, लंगर कभी-कभी
करना है हार्ट फेल तो शेयर खरीद ले
नंगा तुझे करायेगा बम्पर कभी-कभी।

शर्मो-हया का दौर तो गड्ढे में घुस गया
ऊपर चढ़ा हुआ है, कबूतर कभी-कभी
बेरोज़गार भूख से मरते हैं इसलिए
लगता है उनके शहर में, लंगर कभी-कभी।

जो भी बचा था ख़ून वो दंगों ने पी लिया
गुज़रा है इस तरह भी, दिसम्बर कभी-कभी
बच्चों को दूध मिल न सका, मौत मिल गयी
देखे हैं हमने ऐसे भी मंजर कभी-कभी।

गणतंत्र संविधान भला बेचते हैं क्या?
इनसे बड़े हैं मस्जिदो-मंदर कभी-कभी
हड़ताल, बंद, रैलियां, नारों के नाम पर
पूरे नगर ने खाये हैं, पत्थर कभी-कभी।

चमचागिरी न पाओगे तुम खैरनार में
आते हैं इस तरह के भी अफ़सर कभी-कभी
नेताओं की तो नींद भी शेषन ने छीन ली
चढ़ता है इस तरह भी, शनीचर कभी-कभी।

बनते हैं लीडरान भी बंदर कभी-कभी
दूल्हन भगा के ले गई दूल्हे को कार में
होते हैं इस तरह भी 'स्वयंवर' कभी-कभी।

दुःख तो सभी के साथ है घबरा रहा है क्यूं
होती है 'मरसिडीज़' भी पंचर कभी-कभी
हमने सुनाये 'व्यंग्य' तो फूटी है खोपड़ी
होते हैं कहकहे भी सितमगर कभी-कभी।

इसमें भी कुछ भला है

बरबादियों पे अपनी कोई नहीं गिला है
मालूम है ये मुझको, इसमें भी कुछ भला है।

दुनिया में दुःख-ही-दुःख है, रोना है सिर्फ़ रोना
ग़म में भी मुस्कुराना, सबसे बड़ी कला है।

यूं बिजलियां चमन पर, तुमने बहुत गिरायीं
वो फूल क्या जलेगा, पत्थर पे जो खिला है?

प्रारब्ध है या संचित मुझको पता नहीं है
जितना बड़ा है लोटा, उतना ही जल मिला है।

सुख जाते-जाते बोला दुःख से ये बात कहना
वो भी नहीं रहेगा, ऐसा ही सिलसिला है।

जीना पड़ा है मुझको, इस हाल में भी हमदम
हर दिन है युद्ध का दिन, हर रात कर्बला है।

मैय्यत पे मेरी आकर कुछ लोग ये कहेंगे
सचमुच मरा है 'हुल्लड़' या ये भी चुटकुला है।

देश का कूड़ा हटाना चाहता हूँ

हर तरफ़ झाड़ू फिराना चाहता हूँ
देश का कूड़ा हटाना चाहता हूँ।

मुल्क़ की मिट्टी जिन्हें प्यारी नहीं है
उनको मिट्टी में मिलाना चाहता हूँ।

जो तमद्दुन का समंदर पी गये
उनकी लुटिया मैं डुबाना चाहता हूँ।

जी लिया हूँ मैं बहुत अपने लिए अब
देश के कुछ काम आना चाहता हूँ।

आदमी से जानवर अच्छे लगे हैं
गिद्ध जैसा तन सुहाना चाहता हूँ।

इक यही है आरज़ू 'हुल्लड़' हमारी
लीडरों को नोच खाना चाहता हूँ।

चरारे शरीफ़

खो गया जाने कहाँ ईमान मेरे देश का
गर्क़ है क्यों नींद में, दरबान मेरे देश का।

इनको अपने दांव-पेचों से नहीं फुरसत मिली
जल रहा कश्मीर में, खलिहान मेरे देश का।

टालने की नीतियाँ, गर इस तरह चलती रहीं
हो न जाये यह चमन, शमशान मेरे देश का।

'संत' की दरगाह को भी जो बचा पाये नहीं
वो सुरक्षित क्या रखेंगे, मान मेरे देश का।

व्यंग्य ग़ज़ल

समझ से दूर हैं ये भी..........

बड़े मग़रूर हैं ये भी, बड़े मग़रूर है वो भी
समझ से दूर हैं ये भी, समझ से दूर हैं वो भी।

इन्हें है ऐंठ कुर्सी की, वहाँ डंडा कलम का है
नशे में चूर हैं ये भी, नशे में चूर हैं वो भी।

मकानों पर किया कब्ज़ा, ये टी.वी. पर दिखाया है
बड़े मशहूर हैं ये भी, बड़े मशहूर हैं वो भी।

उछलते ही रहे हरदम झपटने के लिए दौलत
बड़े लंगूर हैं ये भी, बड़े लंगूर हैं वो भी।

सड़क पर आ गये जिस दिन, कहेगा फिर यही 'हुल्लड़'
बड़े मज़बूर हैं ये भी, बड़े मज़बूर हैं वो भी।

रोटी भी बनाई है

हर ओर पसीने की इक बाढ़-सी आयी है
लगता है कि कुदरत ने अंगीठी जलाई है।

सड़कों पे जले तलवे, सर तपता है सूरज से
यह आग नरक की क्यों धरती पे लगाई है।

लू ऐसी चली है ये पंछी भी झुलसते हैं
सौगात ये धरती पर किसने भिजवाई है।

गंजे ने कहा मुझसे—"आफ़त तो हुई अपनी,
पत्नी ने मेरे सर पर रोटी भी बनाई है।"

मुस्कुराना सीख लो

मुश्क़िलों में हौसले का आज़माना सीख लो
दर्द को भी यार मेरे, गुनगुनाना सीख लो।

डूबने से डर गया जो, पार क्या जा पायगा
तुम समंदर के किनारे, घर बनाना सीख लो।

ग़म अगर आये-तो-आये, खैर मक़दम ही करो
दुश्मनों के सामने भी मुस्कुराना सीख लो।

कोई सुःख-दुःख तब तुम्हें फिर छू नहीं सकता कभी
ज़िन्दगी को एक अभिनय-सा निभाना सीख लो।

चार दिन की ज़िन्दगी में चार सौ हैं आफ़तें
हर खुशी को याद रखो, ग़म भुलाना सीख लो।

क्या करेगी चांदनी

दूर हो महबूब तेरा, क्या करेगी चांदनी
हो अगर दिल में अंधेरा, क्या करेगी चांदनी?

नाचते थे जो गगन में, वो सितारे छिप गये
बादलों का है बसेरा, क्या करेगी चांदनी?

हो मिलन या के जुदाई, सब समय का खेल है
वक़्त ही असली चितेरा, क्या करेगी चांदनी?

रूप तेरा देख ले तो चांद भी गश खायगा
आह जब डालेगी डेरा क्या करेगी चांदनी?

क्या तेरी औकात है?

आजकल तो हर कदम पर फूल की बरसात है
जिसको देखो कह रहा है—आपकी क्या बात है!

वक़्त के जूते पड़ेंगे, तब पता चल जायगा
चार दिन की चांदनी है, फिर अंधेरी रात है!

लाख सूरज रोशनी दे, पर नहीं कुछ फ़ायदा
क्या करेगा यह सवेरा, ज़ब दिलों में रात है!

बेटियों का बाप होता, एक बादल अश्क़ का
यह बरसता है बहुत, जब लौटती बारात है।

मत चलो ऐसे अकड़कर, ताव देकर मूँछ को
यार! रावण मर गया तो क्या तेरी औकात है!

क्या करें?

मुश्किलें हैं हर सफ़र में, आह भरकर क्या करें?
मौत आती है किसी दिन, रोज़ मरकर क्या करें?

एक दिन शृङ्गार सबके, ही कफ़न बन जायेंगे
अब बरातों में बता दे यार सजकर क्या करें?

जानवर हैं आदमी से सौ गुना बेहतर यहाँ
आप ही बतलाइए इनसान बनकर क्या करें?

दोस्त तो मिलते रहेंगे हर गली, हर मोड़पर
सोचते हैं जख़्म अपने रोज़ भरकर क्या करें?

उसे वो भूल जाते हैं

किनारे झील के अकसर, मुझे जब याद आते हैं
मिलन की माधुरी के क्षण, नज़र में कौंध जाते हैं।

जमी थी बर्फ़ पर्वत पर, मगर तन तो सुलगते थे
लगी थी आग पानी में, वो मंजर झिलमिलाते हैं।

नहीं बाहर है कोई जख़्म, पर इस दिल की मत पूछो
चुभे भीतर जिगर में जो वो खंजर याद आते हैं।

शिकायत है यही उनसे मुहब्बत के हँसी लम्हे
जिन्हें हम याद रखते हैं उसे वो भूल जाते हैं।

तुझे अपनी हस्ती मिटानी पड़ेगी

मुहब्बत की क़ीमत चुकानी पड़ेगी
नदी आंसुओं की बहानी पड़ेगी।

ज़रा सोच ले दिल लगाने से पहले
तुझे आग घर में लगानी पड़ेगी।

सफ़र प्यार का इतना आसां नहीं है
तुझे अपनी गठरी गंवानी पड़ेगी।

किसी के सपन को सजाने की खातिर
तुझे नींद अपनी उड़ानी पड़ेगी।

बिठाया था पलकों पे इक रोज़ जिसको
अब अर्थी उसी की उठानी पड़ेगी।

इबादत ख़ुदा की कि हो शेर-गोई
तुझे अपनी हस्ती मिटानी पड़ेगी।

तुक भले ही जोड़ दो

दोस्तों के आंसुओं से, खेलना तुम छोड़ दो
दिल नहीं तोड़ो किसी का, टांग चाहे तोड़ दो।

डॉक्टर से यूं कहा पेशेन्ट ने कल शाम को
हो गया दीवालिया मैं अब तो पीछा छोड़ दो।

लफ़्ज़ की अय्याशियाँ तो शायरी हरगिज़ नहीं
तुम दिमाग़ी कसरतों से तुक भले ही जोड़ दो।

ये दिये जलते रहे

दुश्मनों की हर डगर को मूंग-सा दलते रहे
पांव में छाले पड़े थे वीर पर चलते रहे।

जिस्म की हर सांस तक सेनानियों की देन है
सूलियों पर वो चढ़े, हम चैन से पलते रहे।

आंच ना आज़ादियों की मंद पड़ जाये कहीं
बर्फ़ की मानिंद सैनिक रात दिन गलते रहे।

हैं शहीदों की बदौलत देश की दीवालियाँ
वो बुझे थे इसलिए ही ये दिये जलते रहे।

क्यों नहीं देता दिखाई रातभर

आपने बिजली भगायी रातभर
नींद फिर मेरी उड़ायी रातभर
शम्मा तब हमने जलायी रातभर
खुद पे ही बिजली गिरायी रातभर।

एक परवाना यूं बोला कान में
लीडरों की कर खिचायी रातभर
है तअज़्ज़ुब उल्लुओं के राज में
क्यों नहीं देता दिखाई रातभर।

फीस के पैसे जुए में हारकर
बाप ने बिटिया रुलाई रातभर
आंसुओं के खैर मक़दम के लिए
ज़ोर से बरसात आयी रातभर।

मच्छरों ने गीत गाये बेसुरे
खटमलों ने धुन बजायी रातभर
एक शायर बीस ग़ज़लें पढ़ गया
दोस्त ने इतनी पिलायी रातभर।

सब्र रख होगा सवेरा लेट जा
ओढ़कर सिर पर रजायी रातभर।

हम भी हार जायेंगे तुम भी..........

ज़हर है हवाओं में, सांस ले न पाओगे
दहशतों के साये में ज़िन्दगी बिताओगे
ये नगर कला का था आजकल बला का है
कब तलक यूं कांधे पर, अर्थियां उठाओगे।

मुम्बई में ख़ूंरेज़ी ग़र नहीं रुकेगी तो
नाश्ते में रोजाना गोलियां ही खाओगे
ईश्वर तेरे घर में क़त्ल हो गया 'गुलशन'
मंदिरों में पूजा का फल यही दिलाओगे।

वक़्त से बड़ा क़ातिल ना हुआ है, ना होगा
खुद को उसके हाथों से किस तरह बचाओगे
कौन वो जुआरी है जो समय से जीतेगा
हम भी हार जायेंगे तुम भी हार जाओगे।

मुफ़लिसो तुम्हें कोई माफ़िया न मारेगा
भूख से तड़पकर तुम खुद ही मारे जाओगे
वहशियों के मुंह में तो ख़ून लग गया ऐ 'सब्र'
भेड़ियों को भाषण से क्या सुधार पाओगे?

देश को रबड़ी खिलायी आपने

तख़्त पर जोरू बिठायी आपने
सब शराफ़त बेच खायी आपने

एक अनपढ़ मुख्यमंत्री बन गयी
ये प्रथा अच्छी चलायी आपने।

जेल में जाने से पहले शुक्रिया
देश को रबड़ी खिलायी आपने।

भैंस भी चारा चरे तो दूध दे
क्यों दिखायी बेवफ़ाई आपने।

टीम में ग्यारह खिलाड़ी चाहिये
सिर्फ़ दो से मार खायी आपने।

जेल में जब से गये बीमार हो
खूब ये तिकड़म भिड़ायी आपने।

मत बताना लाख ये चमड़ी कुटे
है कहाँ दमड़ी छिपायी आपने।

देश की लुटिया डुबायी आपने

डेढ़ सौ पुस्तक छपायी आपने
क्यों करी इतनी लिखायी आपने
रात दस पन्ने पढ़े तो यूं लगा
नींद की दे दी दवायी आपने।

एक मोटर साइकिल के वास्ते
मार दी पहली लुगाई आपने
जानता हूँ कलर टी.वी. के लिए
दूसरी थी जलाई आपने।

तीसरी न मार पाये आज तक
रोज़ पिस्टल आज़मायी आपने
खूब मंगल-सूत्र की इज़्ज़त रखी
वेश्या घर पर नचायी आपने।

विस्कियों की बोतलें चालू रहीं
बंद की मां की दवाई आपने
राम-मंदिर से चुरायी चप्पलें
बंदगी अच्छी निभायी आपने।

जब समर्थन ही नहीं था क्यों लड़े
किरकिरी तो खुद करायी आपने
वित्तमंत्री से भिखारी ने कहा
भूमिका मेरी निभायी आपने।

इन पचासों वर्ष की उपलब्धियाँ
देश की लुटिया डुबायी आपने
नींद आती है हमें जिस ग़ज़ल से
वो दुबारा क्यों सुनायी आपने।

इस जयन्ती वर्ष में

मुल्क़ जो हमला करेगा, इस जयंती वर्ष में
यार वो औंधा गिरेगा, इस जयंती वर्ष में।

जो मिटे हैं इस वतन के वास्ते उनके लिए
कोई तो आहें भरेगा, इस जयंती वर्ष में।

भूल जायें लाख हम सब, उन शहीदों की व्यथा
वक़्त तो चर्चा करेगा, इस जयन्ती वर्ष में।

ख़ून, हत्या, रेल में बम और दंगे अपहरण
ये शनी ये ही करेगा, इस जयन्ती वर्ष में।

मां शहीदों की कभी रोयी नहीं थी आज तक
लग रहा आंसू गिरेगा इस जयन्ती वर्ष में।

आज के इस दौर में

वक़्त को पहचानना है, आज के इस दौर में
दुश्मनों को जानना है, आज के इस दौर में।

जब पिये आंसू हज़ारों, एक निकला कहकहा
हास्य भी इक साधना है, आज के इस दौर में।

व्यंग्य कवियों ने पचायी, विषभरी आलोचना
मंच शिव-आराधना है, आज के इस दौर में।

चंद सिक्कों में बिकी है, धर्मपालों की क़लम
क्या कला? क्या भावना है? आज के इस दौर में।

जो हुआ अच्छा हुआ है दोस्तो

आप लोगों की दुआ है दोस्तो
जो हुआ अच्छा हुआ है दोस्तो।

पूछते हो बेईमानी कौन है
लीडरों की वो बुआ है दोस्तो।

हो न पाया जो कि अपने बाप का
वो भला किसका हुआ है दोस्तो।

हर युधिष्ठिर हारता है दांव में
ज़िन्दगी ऐसा जुआ है दोस्तो।

क्या करेगी चांदनी?

चांद औरों पर मरेगा क्या करेगी चांदनी?
प्यार में पंगा करेगा क्या करेगी चांदनी?
कौन पूछेगा 'जिग़र' को, इस मुरादाबाद में
राज जब मच्छर करेगा, क्या करेगी चांदनी?

जब नगर मशहूर होगा गंदगी के नाम से
डूबकर 'हुल्लड़' मरेगा, क्या करेगी चांदनी?
जायंगे जिस भी गली में, आपके ऐजाज़ में
छत्त से कूड़ा गिरेगा, क्या करेगी चांदनी?

हर सड़क घायल मिलेगी नालियां हँसती हुई
तू वहाँ औंधा गिरेगा, क्या करेगी चांदनी?
नाम होगा इस शहर का, आज से कीचड़ नगर
कौन अब पीतल धरेगा, क्या करेगी चांदनी?

धूल झोंकी और वो भी दोस्तों की आंख में
वक़्त जब मिरचें भरेगा, क्या करेगी चांदनी?
'मृत्युदाता' तो तुम्हारे पतन का आग़ाज़ है
जब शनी नंगा करेगा, क्या करेगी चांदनी?

जेल में तो आपको चारा नहीं मिल पायगा
पेट तब कैसे भरेगा, क्या करेगी चांदनी?
रोड पर बरसात से, मम्मी का मेकप धुल गया
पुत्र गश खाकर गिरेगा, क्या करेगी चांदनी?

ग़ैर की बाहों से लिपटी यार सत्ता सुन्दरी
ब्रह्मचारी क्या करेगा, क्या करेगी चांदनी?
फूल जैसे नाम वाली, कांपती थी जेल में
अब तो आई जी भी डरेगा, क्या करेगी चांदनी?

यार ये दिल है तुम्हारा या के जनता पार्टी
रोज टूटेगा गिरेगा, क्या करेगी चांदनी?
चांद से हैं ख़ूबसूरत, भूख में दो रोटियाँ
कोई बच्चा जब मरेगा, क्या करेगी चांदनी?

डिग्रियां हैं बैग में, पर जेब में पैसे नहीं
नौजवां फाके करेगा, क्या करेगी चांदनी?
लाख तुम फ़सलें उगा लो एकता की देश में
इसको जब नेता चरेगा, क्या करेगी चांदनी?

जो बचा था ख़ून वो तो सब सियासत पी गयी
खुदकुशी खटमल करेगा क्या करेगी चांदनी?
दे रहे चालीस चैनल नंगई आकाश से
चांद इसमें क्या करेगा, क्या करेगी चांदनी?

मूंछ वाली मैंजबी को दिल दिया है चांद ने
चांद जब दाढ़ी धरेगा, क्या करेगी चांदनी?
क्या करेगा पूर्णिमा का चांद जग के वास्ते?
आगरा भर्ती करेगा, क्या करेगी चांदनी?

एक शायर पी-पिलाकर मंच पर ही सो गया
जब ये खर्राटे भरेगा, क्या करेगी चांदनी?
गद्य में भाषण पिलाया, फीस ली, चलते बने
काव्य तो रोया करेगा, क्या करेगी चांदनी?

पेड़ के नीचे पड़ा है, एक गंजा छांव में
नारियल सर पर गिरेगा, क्या करेगी चांदनी
जो कि पूरे देश को चारा समझकर चर गये
वक़्त जब उनको चरेगा, क्या करेगी चांदनी?

ड्राइवर तो है नशे में टुन्न पचासों साल से
देश गड्ढे में गिरेगा, क्या करेगी चांदनी?
ये गनीमत है विधायक लात-घूसों से लड़े
फैसला जब बम करेगा, क्या करेगी चांदनी?

हम विदेशों में जमे तो, कुछ 'शलभ' कुढ़ने लगे
एक तो जलकर मरेगा, क्या करेगी चांदनी?
गीदड़ों ने पेपरों में, छाप दी हैं गालियाँ
शेर जब हमला करेगा, क्या करेगी चांदनी?

तुम बुलाये भी गये तो हूट होकर आओगे
शोर जब श्रोता करेगा, क्या करेगी चांदनी?

तू ज़रा फिर सोच ले

'शब्द' से नाटक करेगा? तू ज़रा फिर सोच ले
मौत गीदड़ की मरेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

'शब्द' तो है 'ब्रह्म' उसका गर किया अपमान तो
एक दिन औंधा गिरेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

हास्य कवियों से मिली है, कहकहों को ज़िन्दगी
दर्द खुद आहें भरेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

दिन सुने ही लिख रहे हो हे 'शलभ' 'कौलम' तुम्हें
आगरा भर्ती करेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

बंदरों के हाथ में है उस्तरे जैसी क़लम
सर क़लम खुद का करेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

तुम 'निराला' भी नहीं हो और ना ही 'भारती'
टिप्पणी फिर भी करेगा? तू ज़रा फिर सोच ले।

जो तुझे दारू पिलाकर लेख है लिखवा रहा
तुझसे पहले वो मरेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

मार डालेगा ज़माना फिर मुझे 'सुकरात' सा
बाद में पूजा करेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

जो जियेगा ज़िन्दगी को 'रूह' के अंदाज़ में
जिस्म सूली पर धरेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

माल फोकट का कभी भी पच नहीं सकता मियाँ
'वक़्त' सब बाहर करेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

हवाला कांड

जो हवाला के हवाले हो गये
और काले..... और काले हो गये।

बाप बोला "जा के फौरन सिर मुंड़ा
हम तो जीते जी उठाले हो गये।"

राम वाले भी विलेन साबित हुए
अब कमल के फूल भाले हो गये।

कांग्रेसी तो पुराने चोर हैं
आप क्यों चोरों के साले हो गये।

फ्राड में इनको मिलेगा वर्ल्ड कप
देश में इतने घुटाले हो गये।

एक भालू जी बचे थे कांड से
वो भी पशुओं के हवाले हो गये।

मुश्क़िलों के सामने मत हिनहिनाओ

गीत अपनी आस्था का गुनगुनाओ
आफ़तों की आंख से काजल चुराओ।

ग्रन्थ के उपदेश सब बेकार हैं
तुम कहो मत मित्र, कुछ करके दिखाओ।

आदमी हो मित्र तुम, घोड़े नहीं हो
मुश्क़िलों के सामने मत हिनहिनाओ।

हिम्मते हैं तो ख़ुदा भी साथ देगा
सब मिलेगा तुम कदम को तो बढ़ाओ।

मत ढिंढोरा पीटना खामोश रहना
जब तलक तुम मंज़िलों को पा न जाओ।

इसलिए

घुल गयी है सांस तक में, बदहवासी इसलिए
जिस्म जीते-जी मरा है, रूह प्यासी इसलिए।

जो गले मिलते थे पहले आज क्यों कतरा रहे?
दोस्ती भी हो गयी है अब सियासी इसलिए।

क्या पता कब गोलियों से भून डाले माफ़िया
ज़िन्दगी लगने लगी है, अब ज़रा-सी इसलिए।

एक भी जो साथ देता तब नहीं होता गिला
हैं सभी डूबे सितारे ये उदासी इसलिए।

लंच में भी बस चना है दोस्तो

आदमी से क्या बना है दोस्तो?
ईश्वर ही सरगना है दोस्तो!
जानवर की बात हरग़िज ना करे
आदमी ही मरखना है दोस्तो!

मुफ़लिसी की इंतहा तो देखिये
लंच में भी बस चना है दोस्तो!
बिन पढ़े ही कल्पना से छाप दी
हाँ यही आलोचना है दोस्तो!

चोर, शायर और टी.टी. के लिए
रात में सोना मना है दोस्तो!

मज़ाहिया और तंज़िया ग़ज़लें

अश्क़ से ही क़द बड़ेगा

जब बुजुर्गों से अड़ेगा, तू ज़रा फिर सोच ले
'गौड़' का चांटा पड़ेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

ये सुनारी छोड़ दे, वर्ना लुहारी चोट का
वार इक भारी पड़ेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

मर गया पिछले जनम में, छोड़कर जिस काम को
अब तुझे करना पड़ेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

मिल गयीं खुशियाँ अधिक तो शायरी मर जायगी
अश्क़ से ही क़द बढ़ेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

'सब्र' कर ले, पोंछ आंसू, भूल जा वो ठोकरें
भाग्य से कब तक लड़ेगा, तू ज़रा फिर सोच ले।

लतीफ़े पेलिये साहिब

सुनाकर शायरी को आप हूटिंग झेलिये साहिब
अगर जमना है महफ़िल में, लतीफ़े पेलिये साहिब।

तरक़्की मंच पर, दस-पांच सालों में नहीं होती
ज़रा थोड़े दिनों तक और पापड़ बेलिए साहिब।

हमें मालूम था क्या? ये छटे बदमाश निकलेंगे
मुसलसल पांच सालों तक, इन्हें अब झेलिये साहिब।

सुना क्रिकेट में तो, आप अकसर हार जाते हैं
हमारी बात मानें तो कबड्डी खेलिए साहिब।

कभी कहते चले आओ, कभी लिखते नहीं आता
यहां कनवीनरों में दोगले भी झेलिए साहिब।

मिले तुमको अगर फुरसत तो करना बात माज़ी की
समस्या आग की पहले ज़हन से ठेलिए साहिब।

आज का ये आदमी

अब नहीं हरग़िज़ टलेगा, आज का ये आदमी
मूंग सीने पर दलेगा, आज का ये आदमी

सांप सीधे रास्ते पर चल पड़े उम्मीद है
चाल पर टेढ़ी चलेगा, आज का ये आदमी।

आप केवल आप ही हैं आपकी तो छोड़िए
बाप तक को भी छलेगा, आज का ये आदमी।

है इसे मालूम, पानी है कड़ाही में मगर
पर पकौड़ी तो तलेगा, आज का ये आदमी।

झूठ से दौलत कमाकर, सोचता है मौत पर
साथ में ले के चलेगा, आज का ये आदमी।

ये भी कोई बात हुई

धन की खातिर सिर फुड़वाना–ये भी कोई बात हुई!
अपनी नज़रों से गिर जाना–ये भी कोई बात हुई!

(१) भीख मांगने में अंधे के, हमको था इतराज़ नहीं
उसका रोज़ सिनेमा जाना–ये भी कोई बात हुई!

(२) इस बस को तो आखिर इक दिन गड्ढे में गिरना ही था
एक सीट पर चार बिठाना–ये भी कोई बात हुई!

(३) लोग फिरौती के पैसे से अपने बच्चे पाल रहे
जीने की खातिर मर जाना–ये भी कोई बात हुई!

(४) पत्थर मारा, आम गिराये, घर पर जाकर चूस लिये
ऐसे ही सरकार गिराना–ये भी कोई बात हुई!

(५) ट्रेनों में भी तरह तरह के नये नमूने मिलते हैं
ए.सी. में बीड़ी सुलगाना–ये भी कोई बात हुई!

(६) या तो उसको मानो ही मत, मानो तो पूरा मानो
संशय करके खुद मिट जाना–ये भी कोई बात हुई!

(७) जो होता, अच्छा होता है, भला छिपा हर घटना में
फिर भी दुःख में नीर बहाता ये भी कोई बात हुई!